JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

क्रिस्टोफर इशरवुड की कृतियों पर वेदान्त दर्शन का प्रभाव

प्रीति
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, जामिया नगर, नई दिल्ली – 110025

डॉ. धनञ्जय मणि त्रिपाठी
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली – 110025

सारांश : भारतीय दर्शन की महिमा विश्व भर में विख्यात है। यह संसार का प्राचीनतम दर्शन है आज भी भारतीय दर्शन का अनुशीलन विश्व भर में किया जाता है। वेदान्त दर्शन से प्रभावित अनेकों पाश्चात्य विद्वानों में से एक प्रमुख नाम है क्रिस्टोफर विलियम ब्रैडशॉ इशरवुड (1904-1986) का जो उपन्यासकार, नाटककार तथा दार्शनिक थे। इन्होंने वेदान्त दर्शन से प्रभावित होकर अनेकों मौलिक ग्रन्थ, अनुवाद तथा पत्रिकाएँ लिखी। यह शोध पत्र क्रिस्टोफर विलियम ब्रैडशॉ इशरवुड पर पड़ने वाले वेदान्त दर्शन के प्रभाव से संबंधित है जिसमें क्रिस्टोफर विलियम ब्रैडशॉ इशरवुड के प्रारम्भिक जीवन तथा वेदान्तिक जीवन एवं उनकी वेदान्त दर्शन से प्रभावित कृतियों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

कूटशब्द : क्रिस्टोफर इशरवुड, प्रभवानन्द, वेदान्त दर्शन, इशरवुड, पाश्चात्य विद्वान्, अद्वैत वेदान्त

दर्शन और साहित्य की परम्परा का सार्वभौम रूप होता है और इनके प्रभाव विश्वव्यापी होते हैं। साहित्य और भाषाप्रेमी विद्वानों के लिए कोई भी विधा परायी नहीं होती है। भारतविद्या विशेषकर संस्कृत वाङ्मय और भारतीय दर्शन के प्रति भारतेतर जगत् के आकर्षण एवं कार्यों का लम्बा इतिवृत्त है। वैदेशिक विद्वानों ने भारतविद्या में निहित ज्ञान-विज्ञान के प्रति अपनी अभिरुचि प्रकट की एवं इसके संवर्धन में अपना योगदान दिया। कुछ पाश्चात्य साहित्यकारों ने काव्यरूप में अपनी अभिरुचि प्रकट की –

"न जाने विद्यते किं तन्माधुर्यमय संस्कृते। सर्वदैव समून्मत्ता येन वैदेशिका वयम्॥"[1]

'ईसवी 18वीं शताब्दी में पाश्चात्य पण्डितों का संस्कृत साहित्य की ओर आकर्षण हुआ; और तब से लगातार पश्चिम के विद्वान् संस्कृत वाङ्मय की विविध शाखाओं का अध्ययन करते रहे, और समय-समय पर वहाँ के विद्वत्समाज के हित, संस्कृत ग्रंन्थों के अनुवाद तथा वैज्ञानिक संस्करण एवं आलोचनात्मक निबंध भी प्रकाशित करते रहे।[2]

इस क्रम में जिन विदेशी विद्वानों की चर्चा होती है उनमें अल्बरूनी, विलियम जोन्स, हेनरी थॉमस कोलब्रुक, जेम्स रॉबर्ट वेलेंटाइन, मैक्समूलर, कीलडॉर्न मुग्धानल, ए.वी कीथ आदि प्रमुख हैं जिनके भारतविद्या विषयक कार्यों पर मन्थन किया जाता है।

---

[1] MP Board Class 10th Sanskrit, Chapter 7 विश्वभारतीयम्, (P-32)
[2] संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रथम भाग, आर्थर एंटनी मैक्डॉनल (हिन्दी अनुवाद- चारुचंद्र शास्त्री), 1962, प्राक्कथन (ignca.gov.in)

क्रिस्टोफर विलियम ब्रैडशॉ इशरवुड एक उपन्यासकार, नाटककार, पटकथा-लेखक, आत्मकथाकार, डायरीकार तथा दार्शनिक भी थे। इशरवुड समलैंगिक थे। उनका जन्म 1904 में इंग्लैंड के उत्तर में मैनचेस्टर के पास चेशायर में हुआ था, तथा इनकी मृत्यु 4 जनवरी 1986 सांता मोनिका, कैलिफोर्निया, यूएस में हुई। प्रारंभ में इशरवुड ने निजी शिक्षक रूप में काम किया। इशरवुड ने अपने प्रारम्भिक दो उपन्यासों *All the Conspirator, (1928)* और *The Memorial, (1932)* से प्रसिद्ध प्राप्त की। इशरवुड 1930 के दशक में अपने मित्र डब्ल्यू. एच. ऑडेन के साथ तीन पद्य नाटकों पर उनका सहयोग किया। इशरवुड ने *Lions and Shadow* नामक ग्रन्थ प्रकाशित किया। यह ग्रन्थ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उनकी छात्र के रूप में प्रारम्भिक जीवन और मित्रता का एक मनोरंजक और संवेदनशील विवरण है।[3] 1938 में इशरवुड चीन-जापानी संघर्ष *'Journey to a War'* के बारे में लिखने के लिए डब्ल्यू. एच. ऑडेन के साथ चीन चले गए।[4] *'The Berlin Stories'* के बाद इशरवुड अपने गुरु रामकृष्ण भिक्षु संघ के स्वामी प्रभवानन्द के अनुयायी बनकर भारतीय वेदान्त की ओर मुड़ गए। अगले दशकों में इशरवुड ने प्रभवानन्द के साथ अद्वैत वेदान्त परंपरा के प्रमुख ग्रंथों पर कई अनुवाद कार्य किए। 1953 से अपनी मृत्यु पर्यन्त इशरवुड अपने साथी डॉन बचार्डी के साथ रहे, जो एक चित्रकार थे। तत्पश्चात दोनों समलैंगिक अधिकारों के कार्यों में शामिल हो गए।[5] ब्रिटिश आलोचकों के लिए क्रिस्टोफर इशरवुड उस समय साहित्यिक क्षेत्र से दूर हो गए जब उन्होनें स्वयं को शान्तिवादी घोषित कर दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध की पूर्व संध्या पर अमेरिका जाने के बाद ब्रिटिश उपन्यासकार क्रिस्टोफर इशरवुड को शताब्दी के एक भारतीय संत और विचारक, शङ्कर द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक विचार और आध्यात्मिक अभ्यास की वेदान्तिक प्रणाली में रुचि हो गई। वेदान्तिक अध्ययन में इशरवुड के गुरु दक्षिणी कैलिफोर्निया में रामकृष्ण संप्रदाय के भिक्षु थे। विशेष रूप से स्वामी प्रभवानन्द जिन्हें वे अपने गुरु के रूप में स्वीकार करते हैं, का प्रभाव उनके चिन्तन पर अधिक रहा।

पश्चिमी पाठकों के लिए वेदान्त परंपरा पर उनकी अपनी टिप्पणियों के अतिरिक्त जब उनके प्रशंसक साहित्यिक उत्पादन में गिरावट पर अफसोस कर रहे थे तब इशरवुड वास्तव में एक अंतर–सांस्कृतिक अनुवादक के रूप में नए पाठक वर्ग तक पहुँच रहे थे।

क्रिस्टोफर इशरवुड की कृतियाँ
मौलिक ग्रन्थ

- एन अप्रोच टु वेदान्त, 1963 Vedanta Press
- एसेंसियल ऑफ वेदान्त, 1969 Vedanta Press

अनुवाद कार्य

- द भगवद् गीता (The Song Of God), 1949 NEW YORK, New American Library
- विवेकचुडामणि (Shankra's crest jewel of discrimination), 1947 Vedanta Press HOLLYWOOD CALIFORNIA
- द योगा अफोरिस्म ऑफ पतंजलि (How To Know God), 1953 NEW YORK, New American Library[6]

---

[3] Chrishtopher Isherwood, Encyclopedia Britannica, Inc. (P-1)
[4] 1980, My Guru and His Disciple: chrishtopher isherwood, autobiography (New York: Farrar, Straus, Giroux) (P-2)

[5] Chrishtopher Isherwood, Encyclopedia Britannica, Inc. (P-2)

[6] 1976, Chrishtopher and his kind: chrishtopher isherwood, autobiography ("On 'The Problem of the Religious Novel': Chrishtopher Isherwood and A Single Man." Victor Marsh, University of Queensland) (P-2)

पत्रिकाएँ

- रीलिजन विदाउट प्रेयर्स (Vedanta for modern man)[7]
- द प्रॉब्लेम्स ऑफ द रीलिजस नॉवेल (Vedanta for modern man)[8]
- द गॉस्पल ऑफ श्री रामकृष्ण (Vedanta for western world)[9]
- द गीता एण्ड वॉर (Vedanta for western world)[10]
- द विशिंग ट्री (Vedanta for western world)[11]
- हाइपोथिसिस एण्ड बिलीफ़ (Vedanta for western world)[12]
- Vivekanand and Sarah Bernhardt (Vedanta for western world)[13]

आत्मकथाएँ

- माई गुरु एण्ड हिज डिसिपल, 1980 Farrar, Straus, Giroux
- क्रिस्टोफर एण्ड हिज काइन्ड, 1976 NEW YORK: Avon Books
- कैथलीन एण्ड फ्रैंक, 1972, Simon and Schuster
- लॉयन्स एण्ड शैडोस, 1947, NEW DIRECTIONS

जीवनी

- रामकृष्ण एण्ड हिज डिसिपल, 1965 NEW YORK, Simon and Schuster

नाटक (डब्ल्यू एच ऑडेन के साथ)

- ऑन द फ्रन्टायर, 1938, FABER Paper Covered
- द एसेन्ट ऑफ एफ 6, 1937, FABER Paper Covered
- द डॉग बिनीथ द स्किन, 1935, London Faber and Faber Limited, 24 Russell Square

अन्य उपन्यास ग्रन्थ

- ए सिंगल मैन, 1964, London Mathuen
- ए मीटिंग बाई द रिवर, 1967, New York Noonday Press
- डाउन देयर ऑन ए विज़िट, 1962, NEW YORK, Simon and Schuster
- द वर्ल्ड इन द ईव्निंग, 1954, London Mathuen
- प्रेटर वॉयलेट, 1945, Minneapolis: University of Minnesota Press
- गुड बाय टु बर्लिन, 1939, LONDON THE HOGARTH PRESS

---

[7] 1951, Vedanta for Modern Man: Chrishtopher Isherwood (P-28) HARPER & BROTHERS PUBLISHER, NEW YORK
[8] 1951, Vedanta for Modern Man: Chrishtopher Isherwood (P-247) HARPER & BROTHERS PUBLISHER, NEW YORK
[9] 1945, Vedanta for Western World: Chrishtopher Isherwood (P-266) LONDON GEORGE ALLEN & UNWIN LTD
[10] 1945, Vedanta for Western World: Chrishtopher Isherwood (P-358) LONDON GEORGE ALLEN & UNWIN LTD
[11] 1945, Vedanta for Western World: Chrishtopher Isherwood (P-448) LONDON GEORGE ALLEN & UNWIN LTD
[12] 1945, Vedanta for Western World: Chrishtopher Isherwood (P-36) LONDON GEORGE ALLEN & UNWIN LTD
[13] 1945, Vedanta for Western World: Chrishtopher Isherwood (P-268) LONDON GEORGE ALLEN & UNWIN LTD

- मिस्टर नॉरिस चेंजेस ट्रेन, 1935, London Vintage
- द मेमोरियल, 1932, Minneapolis: University of Minnesota Press
- ऑल द कॉन्सपीरेटर्स, 1928, A NEW DIRECTIONS BOOK
- डायरीज़: खण्ड एक: 1939-1960, (1996)
- द सिक्सटिज़: डायरीज़: 1960-1969, (2010)
- लिबरेशन: डायरीज़: खण्ड तीन: 1970-1983, (2012)[14]

क्रिस्टोफर इशरवुड के अनुवादों में भगवद् गीता शामिल है, जिसका शीर्षक है *'The Song of God'* जो की *1944* में प्रकाशित हुआ, *Shankara's Crest Jewel Of Discrimination (विवेक चूड़ामणि), 1947* में तथा पतंजलि का योगसूत्र जिसका शीर्षक रखा गया *How To Know God* जो *1953* में प्रकाशित हुआ।[15] क्रिस्टोफर इशरवुड ने पश्चिमी पाठकों के लिए वेदान्त की व्याख्यात्मक मार्गदर्शिकाएँ भी प्रकाशित की *An Approach To Vedanta 1963* में, *Essential of Vedanta* का *1969* में प्रकाशन हुआ।

क्रिस्टोफर ने सोसाइटी की पत्रिका और निबंधों के दो संग्रहों का सम्पादन किया *Vedanta For Western World, 1945* में तथा *Vedanta For Modern Man, 1951* में प्रकाशित हुई।[16] अपने गुरु के आग्रह पर उन्होंने 19 वीं सदी के बंगाली रहस्यवादी परमहंस श्री कृष्ण की जीवनी 1965 में रामकृष्ण वेदान्त सोसाइटी के मुख्यालय के लिए लिखी। कलकत्ता के बेलूर मठ और प्रभावशाली स्वामी विवेकानंद के संवाद और निबंधों के संग्रह के परिचय में योगदान दिया, जिसे जॉन येल द्वारा संपादित किया गया था जो एक पूर्व प्रकाशक थे, जॉन येल इशरवुड की टिप्पणियों को पढ़ने पर रामकृष्ण वेदान्त परंपरा से आकर्षित हुए थे।[17]
Chrishtopher And His Kind, 1976 में जब वह एक समलैंगिक साहित्यिक प्रतीक के रूप में उभरे तो ब्रिटेन के साहित्यिक प्रतिष्ठान ने उन पर बहुत गंभीरता से ध्यान दिया। इसके अतिरिक्त उन्होनें रामकृष्ण वेदान्त परंपरा में गुरु के साथ जो प्रकाशित किया, उसकी परिणति क्लासिक में हुई। *My Guru and His Disciples, 1980* को प्रारम्भ में गंभीरता से नहीं लिया गया। केवल कुछ अधिक चतुर साहित्यिक आलोचकों ने उनके बाद के काम में वेदान्त दर्शन के प्रभाव का पता लगाया है, जिसमें *नागराजन, 1972* का नाम प्रमुख है।
अद्वैत प्रशिक्षण जिसने इशरवुड को अपनी कामुकता और लेखन को धार्मिक अभ्यास के साथ एकीकृत करने की अनुमति दी। *My Guru And His Disciple* इशरवुड के सबसे अधिक अवधि तक चलने वाले संबंध का दस्तावेजीकरण करता है, जिसे उन्होनें चालीस वर्षों तक बनाए रखा। यह संबंध उनके किसी पुरुष प्रेमी के साथ नहीं बल्कि अपने आध्यात्मिक गुरु जो रामकृष्ण संप्रदाय के थे और वेदान्त सोसाइटी दक्षिण कैलिफोर्निया के प्रमुख थे। इशरवुड ने पाठकों की एक नई पीढ़ी के बीच महत्त्व प्राप्त किया है, इस बार वेइमर गणराज्य के इतिहासकार के रूप में नहीं, न ही दक्षिण कैलिफोर्निया में समलैंगिक मुक्ति के मादक दिनों के दौरान एक साहित्यिक के रूप में, बल्कि अपनी मांगों को समायोजित करने के संघर्ष के लिए तथा आध्यात्मिक अभ्यास को बनाए रखते हुए भी। **"इशरवुड ने लिखा "धर्म निष्क्रिय शिक्षा का मार्ग नहीं है। यह जागरूकता के लिए एक सक्रिय खोज है"।**[18] (1987) गुरु द्वारा प्रस्तुत वेदान्त के गैर-द्वैतवादी संस्करण में इशरवुड इन दोनों को एकीकृत करने में सक्षम थे।

---

[14] Chrishtopher Isherwood, Encyclopedia Britannica, Inc.(P-2)
[15] 1976, Chrishtopher and his kind: chrishtopher isherwood, autobiography ("On 'The Problem of the Religious Novel': Chrishtopher Isherwood and A Single Man." Victor Marsh, University of Queensland) (P-2)
[16] ("On 'The Problem of the Religious Novel': Chrishtopher Isherwood and A Single Man." Victor Marsh, University of Queensland) (P-2)
[17] ("On 'The Problem of the Religious Novel': Chrishtopher Isherwood and A Single Man." Victor Marsh, University of Queensland) (P-2)
[18] 1987, The Wishing Tree: Christopher Isherwood on Mystical Religion. (Advaita Vedanta and the Repositioning of Subjectivity in the Life writing of Chrishtopher Isherwood, "Homosexualist") Equinox publishing Ltd 2009

A Single Man नामक उपन्यास में शोकाकुल दुखी नायक जॉर्ज को दुखद एवं हास्य व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है और वेदान्त सिद्धान्तों की सूक्ष्म प्रस्तुति को कथा में सहजता से एकीकृत किया गया है।[19] 1972 में हार्वर्ड में विद्यमान एस. नागराजन ने इशरवुड के बाद के उपन्यासों में से इस सबसे सफल उपन्यास का एक गहन अध्ययन प्रकाशित किया जिसमें वेदान्तिक तत्वों पर प्रकाश डाला गया। *The Spectator* में फिलिप हेनशर लिखते हैं कि **"1940 के दशक की शुरुआत में इशरवुड पूर्वी रहस्यवाद को प्रदर्शित करने वाले पहले पश्चिमी लोगों में से एक थे"।**[20] रिचर्डसन ने स्पष्ट रूप से दावा किया है कि वेदान्त का हिन्दू संप्रदाय 1930 के दशक में कैलिफोर्निया में फैशनेबल बन गया था।[21] और उन्होनें पाया कि इशरवुड का वेदान्त के प्रति जुनून और पवित्र बनने के उनके प्रयास वह भी तब जब इशरवुड पुराने सांसारिक समय के साथ अच्छा समय बिताने के प्रलोभन से जूझ रहे थे। कुछ लोगों के लिए यह प्रतीत हो सकता है कि मात्र आध्यात्मिक दुविधा इशरवुड के अस्तित्व का केन्द्रीय केंद्र बिन्दु बन गया वरन् उन्होंने एक हिन्दू भिक्षु बनने पर भी विचार किया और लगभग दो वर्षों तक इस उद्देश्य के लिए स्वामी प्रभवानन्द के मठ इवर ऐवन्यू पर वेदान्त आंदोलन के हॉलीवुड मुख्यालय में रहे।[22] एक नास्तिक के रूप में वह अपनी एंग्लिकन (अंग्रेजी) परवरिश से निराश थे और एक ऐसे पिता से वंचित थे जिसने पूर्वी दर्शन में रुचि दिखाई थी। इशरवुड ने अपने सबसे अच्छे दोस्त डब्ल्यू. एच. ऑडेन के विपरीत धर्म छोड़ दिया था और ऑडेन, स्पेन्डर तथा उनकी पीढ़ी के कई अन्य लोगों की तरह शांतिवादी के रूप में कर्तव्यनिष्ठ पद लेने से पहले कुछ समय के लिए समाजवाद को अपनाया। इशरवुड को अपनी माँ के एंग्लिकनवाद के पवित्र आलिङ्गन से घृणा थी और कैथोलिक के प्रति उनके वर्ग आधारित दंभ से वह विशेष रूप से विकर्षित थे। इशरवुड को शुरू में इन सभी प्राच्य सिद्धान्तों एवं बातों पर सन्देह था। *An Approach To Vedanta* में योग के प्रति उनके स्वयं के प्रारम्भिक पूर्वाग्रहों का चित्रण अतिरंजित है। गेराल्ड हर्ड और स्वामी प्रभवानन्द दोनों ने इशरवुड के प्रारम्भिक संशयवाद का सम्मान किया। सिद्धान्त की तुलना में अभ्यास तथा प्रत्यक्ष अनुभवजन्य अनुभव पर जोर दिया।[23] इशरवुड स्वामी के प्रति आदर और प्रशंसा में *Vedanta For Western World* में प्रकाशित एक पत्रिका में कहते हैं कि – "मैं उनकी शिक्षाओं पर पूरे मन से विश्वास नहीं करता हुँ और मैं ऐसा दिखावा भी नहीं करूंगा, लेकिन शुरुआत करने के लिए मुझमें पर्याप्त आस्था है। मेरा कारण आहत या अपमानित नहीं है। मेरा दृष्टिकोण पूर्णतः प्रयोगात्मक है। मैं अपने आप को उनके हाथों में सौंप दूँगा और उन पर कम से कम उतना करूंगा जितना में अपने डॉक्टर पर करूंगा"।[24]

इशरवुड ने अपने बर्लिन निवास के क्रम में जिस तरह स्व अर्थ (अस्तित्व, अहंभाव) के लिए नई संभावनाओं का अभ्यास करने के तरीके के लिए जर्मन भाषा को अपनाया था उसी प्रकार उन्होनें अपने पूर्वाग्रह के बावजूद वेदान्त की बहु भारतीयता को मददगार पाया। इशरवुड संस्कृत बोलने के लिए वेदान्त के आभारी थे।[25] इशरवुड के सत्तामूलक संकट और एक एकीकृत (व्यक्तिगत मिथक) की उनकी खोज को देखते हुए यह महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने दर्शन की प्रमुख अवधारणाओं का अत्यंत गहन अध्ययन किया।

---

[19] 1964, A Single Man: Chrishtopher Isherwood ("On 'The Problem of the Religious Novel': Christhopher Isherwood and A Single Man." Victor Marsh, University of Queensland) (P-9)

[20] 2004, The Spectator: Phillip Hensher (https://www.spectator.co.uk/article/christopher-and-his-kind/)

[21] ("On 'The Problem of the Religious Novel': Chrishtopher Isherwood and A Single Man." Victor Marsh, University of Queensland) (P-6)

[22] 2004, A Life Without Secrets: joel Greenberg. (Advaita Vedanta and the Repositioning of Subjectivity in the Life writing of Chrishtopher Isherwood, "Homosexualist") Equinox publishing Ltd 2009

[23] 1980, My Guru and His Disciple: chrishtopher Isherwood, autobiography (P-20) Vintage 2013

[24] 1966, Hypothesis and Belief Exhumations: Chrishtopher Isherwood, (Vedanta for Western World, P-40) LONDON GEORGE ALLEN & UNWIN LTD.

[25] 1997, The Spritual Heart of Service: Deikman (Advaita Vedanta and the Repositioning of Subjectivity in the Life writing of Chrishtopher Isherwood, "Homosexualist") Equinox publishing Ltd 2009

अद्वैत परंपरा वास्तविकता की एक गैर-द्वैतवादी अवधारणा के निर्माण से संबंधित है। ब्रह्म अर्थात् पूर्ण वास्तविकता का वह भाग जो प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान है अर्थात् आत्मन् जिसे ब्रह्म से अलग नहीं माना जाता है यही अद्वैत परंपरा है। इशरवुड *The Crest Jewel Of Discrimination* के अनुवाद करते समय शङ्कराचार्य द्वारा लिखित विवेक चुडामणि में वर्णित अद्वैतवाद का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि – "शङ्कर केवल उसे वास्तविक मानते हैं जो न तो बदलता है और न ही अस्तित्व में रहता है। कोई भी वस्तु, किसी भी प्रकार का ज्ञान पूर्ण रूप से वास्तविक नहीं हो सकता है यदि उसका अस्तित्व केवल अस्थायी है। पूर्ण वास्तविकता का तात्पर्य स्थायी अस्तित्व से है"।[26]

इशरवुड ने दर्शन के कुछ अधिक सूक्ष्म पहलुओं में एक परिष्कृत अंतर्दृष्टि प्राप्त की है, जो इन शब्दों की सूक्ष्म समझ और उन्हें मोटे तौर पर **ईश्वर** या **आत्मा** के रूप में अनुवाद करने की अनिच्छा से स्पष्ट है।[27] इशरवुड की वामपंथी नास्तिक सहानुभूति और एंग्लिकनवाद की अस्वीकृति से संबंधित कारणों से हर्ड ने आस्तिक प्रतिनिधित्व से परहेज किया। इशरवुड विशेष रूप से 'भगवान' की धारणा के प्रति प्रतिरोधी थे ईश्वर के विषय में इशरवुड कहते हैं कि – "ईश्वर" शब्द की मेरी व्याख्या वामपंथी धार्मिक विरोधी प्रचार से काफी सरलता से ली गई थी। पूंजीवादी सुपरबॉस के प्रतीक के अतिरिक्त ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं हैं। उसे पूँजीपतियों द्वारा देवता बनाया गया ताकि वह ऊपर से मजदूर वर्ग के लोगों पर शासन कर सके, उन्हें लोगों की अफीम जो की धर्म है, से नशीला बना सके और इस तरह उन्हें लंबे समय तक काम करने और भुखमरी से संतुष्ट कर सके।

इशरवुड ने जब 20 वर्षों तक वेदान्त का अच्छा अध्ययन और अभ्यास किया था। तब *1963* में प्रकाशित *An Approach To Vedanta* में लिखते हैं – "ईश्वर के लिए संस्कृत में एक शब्द है- **गुणयुक्त** यह ईश्वर है लेकिन **ब्रह्म** बिना किसी गुण, बिना इच्छा, बिना मनोदशा के वास्तविकता है। माया के भीतर दिखने वाला ब्रह्म ही ईश्वर के रूप में प्रकट होता है। यदि आप ब्रह्म का अनुवाद **वास्तविकता** या **पूर्ण** के रूप में करते हैं, तो भी आपको यह समझना होगा की इसका क्या अर्थ है। ये अनदेखे शब्द इतने अस्पष्ट हो गए हैं। यदि आप **द गॉडहेड** का उपयोग करते हैं जैसा कि एकहार्ट के अनुवादों में किया गया है, तो आप एक परिभाषा के करीब जाते हैं क्योंकि शब्दकोश के अनुसार इसका अर्थ है **"ईश्वर का अनिवार्य अस्तित्व"।**[28]

अपने गुरु के संरक्षण में इशरवुड की वेदान्त दर्शन में अंतर्दृष्टि काफी विशिष्ट है: "ऐसा कहा गया है की आत्मा हमारे भीतर की वास्तविकता है। लेकिन जब कोई इसे कहने के लिए एकमात्र भी अंग्रेजी शब्द खोजता है तो वह नहीं मिल पाता क्योंकि ईसाई धर्म इस अवधारणा को बिल्कुल स्वीकार नहीं करता है। **"आत्मा"** प्रश्न से परे है आत्मा ईश्वर नहीं है आत्मा पूर्ण रूप से अस्पष्ट है।

इस प्रकार पूर्व नास्तिक इशरवुड ने स्पष्ट रूप से अद्वैत वेदान्त स्थिति की कई प्रमुख विशेषताओं का वर्णन किया है ।

निष्कर्ष

इस प्रकार वेदान्त दर्शन का प्रभाव पाश्चात्य विद्वानों एवं पाश्चात्य जगत् पर पड़ा। 'क्रिस्टोफर इशरवुड की कृतियों पर वेदान्त दर्शन का प्रभाव' इस शोध पत्र में वेदान्त दर्शन तथा सम्पूर्ण भारतीय दर्शन की विदेशों में महत्ता को प्रदर्शित किया गया है, यद्यपि इसकी महत्ता अति विशाल एवं व्यापक है तथापि इसके किञ्चित अंश को उजागर किया गया है कि किस प्रकार वेदान्त दर्शन के प्रभाव ने एक एंग्लिकन उपन्यासकार क्रिस्टोफर इशरवुड को इतना प्रतिभाशाली दार्शनिक के रूप में उभारा। क्रिस्टोफर

[26] 1947, The Crest Jewel of Discrimination: Chrishtopher Isherwood, Vedanta Press Hollywood California, Second Edition- 1971 (P-09).

[27] 1999, Great Souls: Vedanta's Western Poet: Mark Hawthorne. (Advaita Vedanta and the Repositioning of Subjectivity in the Life writing of Chrishtopher Isherwood, "Homosexualist") Equinox publishing Ltd 2009

[28] 1963, An Approach to Vedanta: Chrishtopher Isherwood. (Advaita Vedanta and the Repositioning of Subjectivity in the Life writing of Chrishtopher Isherwood, "Homosexualist") Equinox publishing Ltd 2009

इशरवुड पर वेदान्त का इतना अधिक प्रभाव हुआ की वह वेदान्त पर अनेकों रचनाएँ करने लगे, पत्रिकाएँ लिखने लगे, यहाँ तक की उन्होंने अपने गुरु प्रभवानन्द के साथ मिलकर वेदान्त दर्शन से संबंधित भारतीय ग्रंथों का अनुवाद भी किया। क्रिस्टोफर इशरवुड से प्रभावित होकर ही कई विदेशी विद्वानों ने वेदान्त पर कार्य किए हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. Altman, Denis, 2004 "One Snap Too Many of Isherwood the Camera." Review of *Isherwood: A Life*, by Peter Parker.
2. Berg, James J. and Chris Freeman, 2001 *The Isherwood Century: Essays on the Life and Work of Christopher Isherwood*. Madison: University of Wisconsin Press.
3. Hensher, Philip, 2004 "Christopher and his Kind." Review of *Isherwood: A Life*, by Peter Parker. *The Spectator.*
4. Isherwood, Christopher, 1945 *The Berlin Stories*. New York: New Directions.
5. Isherwood, Christopher, 1963 *An Approach to Vedanta*. Hollywood, CA: Vedanta Press.
6. Isherwood, Christopher, 1965 *Ramakrishna and his Disciples*. London: Methuen (Calcutta: Advaita Ashrama, 1980).
7. Isherwood, Christopher, 1966 *Exhumations*. London: Methuen; New York: Simon & Schuster.
8. Isherwood, Christopher, 1969 *Essentials of Vedanta*. Hollywood: Vedanta Press.
9. Isherwood, Christopher, 1976 *Christopher and his Kind*. New York: Farrar Straus and Giroux [London: Methuen].
10. Isherwood, Christopher, 1980 *My Guru and his Disciple*. London: Eyre Methuen.
11. Isherwood, Christopher, 1947 *Shankara's Crest Jewel of Discrimination*. Hollywood: Vedanta Press.
12. Nagarajan, S., 1972 "Christopher Isherwood and the Vedantic Novel: A Study of 'a Single Man.' *Ariel—a Review of International English Literature* 3.4 (October 1972): 63–71.
13. Richardson, Owen, 2004 "His life through the Lens." Review of *Isherwood: A Life*, by Peter Parker.
14. शर्मा, राममूर्ति, भारतीय दर्शन की चिन्तनधारा, चौखम्बा, वाराणसी
15. स्वामी सत्यानन्द सरस्वती (व्याख्याकार), ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली